शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ३० : नई दिल्ली : ३० अक्टूबर से ५ नवम्बर २०११

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ४९ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ४७, सर्व ९६ सानंद केलवा विराज रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यप्रवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। १०वां अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर प्रारंभ हो गया है। इस शिविर में ६५ से अधिक विदेशी शिविरार्थियों के भाग लेने की सूचना प्राप्त हो चुकी है। १० नवम्बर को चतुर्मास की समाप्ति के अगले दिन पूज्य आचार्यप्रवर केलवा से विहार कर देंगे। १५ जनवरी को मर्यादा महोत्सव हेतु आमेट पधार जाएंगे।

संस्मरणों का वातायन : आचार्यश्री तुलसी

बीदासर प्रवास : उल्लेखनीय श्रावक (८७७)

"बीदासर थली संभाग का प्रमुख क्षेत्र है। तेरापंथ को थली में लाने का श्रेय बीदासर के श्रावक समाज को है। बात ऋषिराय के समय की है। विक्रम संवत १८८६ में उनका चातुर्मास पाली (मारवाड़) था। पाली उस समय व्यापार के लिए प्रसिद्ध मंडी थी। थली के लोगों का वहां से व्यापारिक सम्बन्ध था। बीदासर के लोग भी वहां जाते रहते थे। उन्होंने ऋषिराय के बारे में सुना। वे उनके दर्शन करने गए। तेरापंथ के बारे में जिज्ञासा बढ़ी। प्राथमिक रूप में उन्हें कुछ जानकारी मिली। बीदासर जाकर उन्होंने वहां के प्रमुख लोगों के सामने चर्चा की। उन लोगों ने पाली पहुंचकर ऋषिराय को बीदासर पधारने की प्रार्थना करने का निर्णय लिया। इस निर्णय के अनुसार शोभाचन्दजी बैंगानी, उत्तमचन्दजी बैंगानी, पृथ्वीराजजी बैंगानी और पंचाणदासजी बैंगानी ये चार व्यक्ति ऊंटों पर सवार होकर पाली पहुंचे। उन्होंने ऋषिराय के दर्शन कर थली पधारने की प्रार्थना की। प्रथम बार की प्रार्थना पर ही ऋषिराय ने उनको समय की अनुकूलता के साथ थली की यात्रा करने का आश्वासन दे दिया।

बीदासर के कुछ श्रावकों की सूझबूझ से ऋषिराय थली में पधारे और थली संभाग तेरापंथ का एक मुख्य केन्द्र बन गया। बीदासर के श्रावक श्रद्धाशील हैं, संघभक्त हैं और धर्मसंघ के प्रति वफादार हैं। क्षेत्र साताकारी है। आचार्यों की उस क्षेत्र पर विशेष कृपा रही है। इस क्षेत्र से तेरापंथ को आचार्य मघवा और साध्वीप्रमुखा गुलाब सती जैसे रत्न मिले हैं तो मातुश्री छोगांजी, मातुश्री वदनांजी और साध्वीप्रमुखा लाडांजी के स्थिरवास का अवसर भी इसी क्षेत्र को मिला है। मैंने भी यहां कई चातुर्मास और मर्यादा महोत्सव किए हैं। वर्तमान में यहां साध्वियों का समाधि केन्द्र है।

७ अप्रैल १९९७, सोमवार। सोमवती अमावस्या का दिन। चाड़वास से विहार कर हम बीदासर पहुंचे। तेरापंथ सभा भवन के विशाल प्रांगण में स्वागत का कार्यक्रम चला। स्वागत के उत्तर में मैंने कहा 'इन वर्षों में बीदासर कई दृष्टियों से नया लग रहा है। पूरे कस्बे में सड़कें बिछ गई हैं। ओसवाल श्रीसंघ का नया भवन बन गया। स्थानीय लोगों को अनेक प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हुई हैं। कस्बे के विकास की दृष्टि से इनका महत्त्व है। पर कुछ अवांछित बुराइयां भी यहां पनपी हैं, ऐसी बात मेरे कानों में आई है। दो-दो माताओं की कर्मभूमि और पूज्य कालूगणी के शब्दों में वीरभूमि कहलानेवाले बीदासर में तम्बाकू जैसे व्यसन की बात भी पीड़ा पहुंचाने वाली है। यहां यदि शराब और जुए को बढ़ावा मिलता है तो यह उचित नहीं है।'

बीदासर की कुछ विशेषताएं उजागर करते हुए मैंने कहा 'बीदासर तपोभूमि है। यहां हमारे तीन तपस्वी साधु-साध्वियों ने लघुसिंह परिपाटी की तपस्या की है। मातुश्री छोगांजी और मातुश्री वदनांजी ने निरन्तर एकान्तर

तपस्या तपी है। साध्वीप्रमुखा लाडांजी की सहिष्णुता यहां के कण-कण में व्याप्त है। यहां के श्रावक व्यसनों की गिरफ्त में आकर कायर न बनें। वे ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना में सतत जागरूक रहकर श्रावक नाम को सार्थक बनाएं। मैं चाहता हूं कि श्रावक-सम्बोध को कंठस्थ करने का अभियान भी यहां चलाया जाए। बीदासर में कभी तत्त्वज्ञ श्रावक-श्राविकाओं की एक लम्बी पंक्ति थी, वह पुनः स्थापित होनी चाहिए।'

तत्त्वज्ञान के सन्दर्भ में कुछ श्रावक-श्राविकाओं का उल्लेख करते हुए मैंने एक दिन कहा 'बीदासर के श्रावक स्वर्गीय प्रतापमलजी सेठिया की गणना तत्वज्ञ श्रावकों में होती थी। उनके छोटे भाई जेठमलजी सेठिया भी तत्त्व की गहरी धारणा रखनेवाले हैं। वे शान्त मनोवृत्ति वाले हैं, गंभीर हैं और आगम-अध्ययन के रसिक व्यक्ति हैं। अपना अधिकांश समय स्वाध्याय में व्यतीत करते हैं। प्रतापमलजी के चार पुत्रों में सोहनलालजी व सुमेरमलजी दोनों तत्त्व के जानकार हैं। सुमेरमलजी सेठिया चिन्तनशील और गहरी धारणावाले श्रावक हैं। जिज्ञासु मनोवृत्ति के होने के कारण जब भी अवसर मिलता है, मेरे पास पहुंच जाते हैं। वे तर्क के लिए तर्क नहीं करते। उनमें ज्ञानवृद्धि की तमन्ना है। कभी-कभी मुझे लगता है कि जयचन्द कोठारी (लाडनूं) से टक्कर लेनेवाला आज यदि कोई व्यक्ति है तो सुमेरमलजी सेठिया हैं। उनकी पकड़ रूढ़ नहीं है, लचकदार है। वे आस्थाशील हैं और जैन दर्शन की नई-नई चीज खोजने के रसिक हैं।'

इसी बात को आगे बढ़ाते हुए मैंने कहा 'तत्त्वज्ञ श्रावकों की घटती संख्या से कभी-कभी असन्तोष के भाव भी आते हैं और तत्त्वज्ञ भाई-बहनों को देखता हूं तो प्रसन्नता भी होती है भले ही वे संख्या की दृष्टि से कम हैं। श्रावक श्रीचन्दजी रामपुरिया की सुपुत्री जतनदेवी जम्मड़ भी तत्त्वरसिक श्राविका है। वह भी स्वाध्याय बहुत करती है। युवा बहनों में प्रतापमलजी सेठिया की पौत्री और सोहनलालजी की पुत्री पुष्पा ने तत्त्वज्ञान में अच्छा विकास किया है। उसे थोकड़े कंठस्थ हैं। वह श्रद्धा में मजबूत है। जब-जब दर्शन करती है, कुछ नया प्राप्त करने की भावना रहती है। मैं चाहता हूं, हमारी श्राविकाएं इस दिशा में और गति करें।'

बीदासर पहुंचे, उसी दिन मध्यान्ह में सार्वजनिक रूप में केशलोच कराया। जनता की उपस्थिति उत्साहवर्धक थी। हम मंच पर पहुंचे, उससे पहले ही प्रवचन पंडाल खचाखच भर गया। जनता का उत्साह देखकर मैंने कहा 'केशलोच और दीक्षा के प्रति लोगों के मन में सहज आकर्षण है। साधारण-सी सूचना पर इतने लोगों की उपस्थिति इस बात का स्वयंभू प्रमाण है।

मुनि मधुकरजी और मुनि दिनेश लोच कर रहे थे। बाल मुनि जम्बू ने लोच करने की इच्छा व्यक्त की। उसकी भावना और उत्साह देखकर मैंने अनुज्ञा दे दी। बाल मुनि जम्बूजी ने बड़े अच्छे तरीके से लोच किया। मैं आश्चर्यचकित रह गया। बाद में उसे इक्यावन कल्याणक पारितोषिक रूप में दिए। इतना छोटा बच्चा इस तरह लोच करे, समझ में ही नहीं आता। मुझे मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी याद आ गए।

८ अप्रैल, मंगलवार। चैत्र शुक्ला प्रतिपदा। आज विक्रम संवत २०५४ का नव वर्षारंभ हो गया। प्रातः महाश्रमणी ने कहा 'बीदासर के श्रावक समाज की भावना है कि प्रवचन के समय गुरुदेव का सान्निध्य मिलना चाहिए। आप सान्निध्य प्रदान करने की कृपा करें, बोलने का कार्य मैं कर दूंगी।' मैंने महाश्रमणी का निवेदन स्वीकार कर प्रवचन सभा में जाने का मन बना लिया। पर केवल सान्निध्य देने की बात मुझे रुचिकर नहीं लगी। मैंने प्रवचन में योगक्षेम वर्ष के बारे में लिखित व्याख्यान 'शासण-सुषमा' का वाचन प्रारंभ किया। बीदासर के कतिपय पुराने श्रावक व्याख्यान के रंगीले रसिक थे। वे अब नहीं रहे, पर लगता है कि उनकी परम्परा चल रही है। लोगों ने रस लेकर व्याख्यान सुना। उनकी तन्मयता, एकाग्रता और प्रसन्नता देखकर मैंने भी बीदासर-प्रवास में प्रतिदिन प्रवचन करने का निर्णय ले लिया।

मध्यान्ह में भी श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति थी। मैंने श्रावक-सम्बोध का संगान किया। कुछ पद्यों का लयबद्ध संगान करने के बाद सरल भाषा में उनका अर्थ भी समझाया। जेसराजजी सेखानी इसकी रिकॉर्डिंग कर रहे हैं, वीडियो कैसेट बना रहे हैं। कैसेट कैसी बन रही है, मुझे पता नहीं है। बीदासर का सभा भवन बहुत ही भव्य और दर्शनीय बन गया। पंचायती नोहरा का झंझट समाप्त हो गया। अच्छा रहा। मेरे स्वास्थ्य की स्थिति सामान्य है। कोष्ठबद्धता कुछ ठीक है। पूरी तरह ठीक होने में कुछ दिन लगेंगे ऐसा लगता है।

११ अप्रैल, शुक्रवार। बीदासर-प्रवास में प्रतिदिन व्याख्यान दिया। मध्यान्ह में भी श्रावक-सम्बोध का संगान किया। सभी ने अच्छा रस लिया। श्रम करना पड़ा, पर सार्थकता रही। युवकों में नशे और जुए की प्रवृत्ति चल

रही थी, वह छूट रही है। अनेक युवकों द्वारा नशे का त्याग किया जा रहा है। काफी उत्साह का वातावरण बन रहा है।

आज हम 'थान-सुथान' में प्रवास कर रही समाधि केन्द्र की साध्वियों को दर्शन देने गए। वहां की संभाल की। सारणा-वारणा की। सब साध्वियां निरन्तर चित्त समाधि में रहें, इस दृष्टि से उन्हें आगम-स्वाध्याय, जप आदि में लीन रहने की प्रेरणा दी। जो साध्वियां घूमने-फिरने में अक्षम थीं, उनको उनके स्थान पर जाकर दर्शन दिए। इस क्रम में हमने साध्वी सूरजकुमारी (खाटू) को देखा। उसे आंखों से दिखाई नहीं देता। उसके मुंह में दांत नहीं है। वह न उठ सकती है और न बैठ सकती है। उसके रोम-रोम में दर्द रहता है, फिर भी वह इतनी प्रसन्न है कि देखते ही जान पड़ता है। व्यवहार-बोध, तेरापंथ-प्रबोध और श्रावक-सम्बोध उसे कंठस्थ है। अर्हत्-वाणी भी कंठस्थ कर ली। उसने कुछ पद्य हमें सुनाए। बहुत अच्छे लगे। इतना अच्छा उच्चारण करती है कि सुननेवाला आश्चर्यचकित हो जाता है। वह आनन्द में निमग्न रहती है। शरीर की ऐसी नाजुक हालत में भी मुदित मन और हंसते-खिलते रहना एक उदाहरण है। कई जगह काम में लिया जाए, ऐसा उदाहरण है। देखकर मन बड़ा प्रसन्न हुआ।

मानसिक प्रसन्नता के फलस्वरूप पारितोषिक तथा बख्शीश दी गई। साध्वी सूरजकुमारी को औषधि आदि के रूप में कोई चीज लेने पर विगय-वर्जन की बख्शीश की। उसकी सेवा करनेवाली साध्वी सुषमाश्री को इक्यावन कल्याणक का पुरस्कार दिया। आज यहां प्रवास का पांचवा दिन है। कल विहार करना है। बीदासर में अभी व्यसन-मुक्ति की दृष्टि से जो वातावरण बना है, उसे चालू रखने के लिए (स्थायित्व देने के लिए) कुछ समणियों को यहां रखा गया है।

आगम साहित्य में साधु और श्रावक के सम्बन्ध की चर्चा के प्रसंग में श्रावकों को साधु-साध्वियों के लिए माता-पिता की उपमा दी गई है। इसी प्रकार उन्हें निश्रास्थान भी माना गया है। श्रावक और साधु का यह अन्योन्याश्रित सम्बन्ध साधना की भित्ति पर आधारित है। श्रावकत्व की आराधना करते हुए साधु-साध्वियों के संयमी जीवन में सहयोगी बननेवाले श्रावक विरल होते हैं। बीदासर के धनराजजी बैंगानी एक ऐसे श्रावक हैं, जो गहरी आस्था के साथ साधु-साध्वियों की स्वास्थ्य साधना में सहयोगी बन रहे हैं। उनकी संघ-सेवा का उल्लेख करते हुए मैंने कह्व

'बीदासर के दोनों भाई धनराजजी और पन्नालालजी धनजी-पनजी के नाम से प्रसिद्ध रहे हैं। पन्नालालजी भी एक संघनिष्ठ श्रावक थे। धनराजजी प्रायः मौन रहनेवाले सीधे-सरल व्यक्ति हैं, पर संघ सेवा के लिए बहुत उदार हैं। साधु-साध्वियों को जब-कभी किसी दवा की अपेक्षा होती है, धनराजजी अपने मेडिकल स्टोर में सदा भावना भाते रहते हैं। इस अवसर को वे अपने सौभग्य का प्रतीक मानते हैं। उनके औषधदान का क्रम एक-दो वर्ष से नहीं, गत चार दशकों से चल रहा है। पहले दिन से लेकर आज तक उनकी भावना अटूट रही है। इस प्रकार से साधु-साध्वियों के सातावंछक श्रावक वास्तव में ही उल्लेखनीय होते हैं।'

इस बार हमारे छापर-प्रवास में और उसके आसपास सरदारशहर से चन्दनमलजी बैद, मोहनजी दसानी, जंवरीमलजी बैद आदि दर्शन करने आए। वहां और भी ऐसे अनेक श्रावक हैं, जो धर्मसंघ के प्रति आस्थावान और समर्पित हैं। यहां कतिपय ऐसे श्रावकों का उल्लेख किया जा रहा है, जो संघ के लिए गौरवभूत हैं, उल्लेखनीय हैं

हमारे एक प्रमुख श्रावक हैं चन्दमनलजी बैद। चन्दनमलजी न केवल संघ-प्रवक्ता हैं, अपितु एक अणुव्रती विधायक भी हैं। धर्मसंघ के साथ-साथ उन्होंने राजनीति में भी अपना प्रमुख स्थान बनाया है। उनकी चरित्रनिष्ठा एवं गुरुनिष्ठा बेजोड़ है। अभी कुछ दिन पूर्व ही वे हृदयाघात से पीड़ित हो गए थे। उन्होंने संकल्प किया कि स्वस्थ होते ही मैं सर्वप्रथम गुरुदेव के दर्शन करूंगा। वे कहते हैं कि मैं तो बचा ही गुरुकृपा से हूं। इसी दृष्टि से वे पिछली दो अप्रैल को कोठारी कुंज में दर्शनार्थ आए। दर्शन करके उन्होंने असीम प्रसन्नता का अनुभव किया।

राजस्थान के मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत को उन पर गहरा विश्वास है। सरदारशहर में 'बापा सेवा सदन' नाम से एक संस्थान है, जो पिछड़े लोगों के संस्कार-निर्माण का काम कर रहा है। बीच में इस संस्थान पर कुछ ऐसे लोगों का कब्जा हो गया, जिन्हें इस संस्थान की प्रवृत्तियों से कुछ लेना-देना नहीं था। इससे संस्थान का अस्तित्त्व ही खतरे में पड़ गया। उस समय भैरोसिंहजी ने चन्दनमलजी से कहा 'मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप इसको हाथ में लें और स्थिति को सुधारें। मैं आपका पूरा-पूरा सहयोग करूंगा। चन्दनमलजी ने उस काम को

हाथ में लिया तो न केवल सरकार का ही सहयोग मिला, अनेक समाजसेवियों ने भी तन-मन-धन से सहयोग किया। राजनीति की काजल-कोठारी में रहकर भी चन्दनमलजी बेदाग रहे हैं। धर्मसंघ की काजल-कोठरी में रहकर भी चन्दनमलजी बेदाग रहे हैं। धर्मसंघ को ऐसे श्रावकों का गौरव होता है।

दूसरे श्रावक हैं भंवरलालजी बैद। वे न केवल एक अणुव्रती हैं, प्रामाणिक हैं, अत्यन्त श्रद्धालु एवं प्रबुद्ध भी हैं। अनेक साधु-साध्वियों को उन्होंने अंग्रेजी भाषा और साहित्य पढ़ाया है। गुरु के प्रति उनका इतना समर्पण भाव है कि केवल श्रद्धा के बल पर वे अनेक बाधाओं को पार कर लेते हैं। अभी कुछ महीने पूर्व ही अचानक बैठे-बैठे उनके कुल्हे की हड्डी क्रेक हो गई। उनकी पत्नी का देहावसान हो चुका है। उनकी स्वयं की उम्र भी काफी है। ऐसी स्थिति में ऑपरेशन करवाना खतरे से खाली नहीं था। हमें जब इस बात का पता चला तो तत्काल एक सान्त्वना संदेश दिया। उन्होंने निवेदन करवाया कि गुरुदेव के सन्देश ने ऐसा जादू किया कि बिना ऑपरेशन ही कुल्हे की हड्डी जुड़ गई। यह है श्रद्धा का चमत्कार।

इसी कोटि के तीसरे व्यक्ति हैं भंवरलालजी बैद के छोटे भाई जंवरीमलजी बैद। वे भी पूरे प्रामाणिक अणुव्रती हैं। यद्यपि उन्होंने डॉक्टरी परीक्षा तो पास नहीं की, पर चिकित्सकीय अनुभव इतना प्रखर है कि आसपास के हजारों लोग उनकी निःशुल्क चिकित्सा से लाभ उठाते हैं। साधु-साध्वियों के लिए भी उनकी दुकान से कितनी दवाइयां आई हैं, इसका कोई हिसाब नहीं है। सचमुच ऐसे श्रावक संघ के लिए बड़े कीमती होते हैं।

चौथे व्यक्ति हैं शुभकरणजी दसानी। यद्यपि अब वे सुजानगढ़ में रहते हैं, पर मूल निवासी सरदारशहर के ही हैं। उनका लगभग पूरा जीवन संघ और संघपति की सेवा में गुजरा है। उनके उर्वर मस्तिष्क से न जाने कितनी योजनाएं निकली हैं और निकल रही हैं। पिछले कुछ वर्षों से वे पक्षाघात से प्रभावित हैं। पर इस अवस्था में भी गत चातुर्मास में वे सुजानगढ़ से प्रायः लाडनूं आते रहते थे। केवल लाडनूं ही नहीं, जहां भी हम जाते हैं, धर्मसंघ एवं संघपति के लिए अपनी सेवाएं प्रदान करते रहते हैं। परवश कर देनेवाली ऐसी बीमारी में भी उन जैसा मनोबल बहुत कम व्यक्तियों में देखने को मिलता है। किसी के पूछने पर उनका एक ही जवाब रहता है 'मैं ठीक हूं।'

पांचवें व्यक्ति हैं अणुव्रती मोहनजी जैन। उनकी निष्ठा भी अपूर्व है। उन्होंने पिछले वर्षों में संस्कार-निर्माण, नशामुक्ति एवं अणुव्रत विश्वभारती के संचालक के रूप में जो काम किया है, वह अपूर्व है। ऐसे व्यक्तियों का मूल्यांकन करने की दृष्टि से ही उन्हें अणुव्रत पुरस्कार मिला। अभी-अभी अणुव्रत विश्वभारती को श्री महादेव सरावगी पुरस्कार भी मिला है। इससे न केवल संस्था की प्रतिष्ठा बढ़ी है, अपितु मोहनजी की सेवा का भी सम्मान हुआ है। 'बापा सेवा सदन' के लिए भी मोहनजी की उल्लेखनीय सेवाएं रही हैं। चन्दनमलजी बैद बड़े आदर के साथ उनका उल्लेख करते हुए कहते हैं 'मोहनजी! तुम्हारा नाम ही शुभ है। अतः तुम 'बापा सेवा सदन' से जुड़े रहो, यही सबसे बड़ा काम है।'

इन थोड़े-से नामों का उल्लेख किया गया है, इसका उद्देश्य श्रावकों और कार्यकर्ताओं का मूल्यांकन ही है। कार्यकर्ताओं का मूल्यांकन ही कार्य को आगे बढ़ाता है। ऐसे अनेक लोग हो सकते हैं। उन सबसे सबको प्रेरणा लेनी चाहिए तथा अपने आपको तदनुरूप ढालने का प्रयास करना चाहिए।

१२ अप्रैल, शनिवार के दिन हम बीदासर से प्रस्थान कर स्वामियों की ढाणीं (स्यामां की ढाणी) में रहे। वहां बीदासर के लोगों ने एक भवन बना रखा है। इससे गांववालों को बड़ी सुविधा हो गई। ढाणी से धरमास गए। धरमास से सीधे बाना पहुंचे। बाना से आज १५ अप्रैल को श्रीडूंगरगढ़ की कृषिमंडी में पहुंच गए। इस यात्रा में लाडनूं, सुजानगढ़, चाड़वास, छापर, बीदासर, श्रीडूंगरगढ़, गंगाशहर, बीकानेर आदि क्षेत्रों के सैकड़ों-सैकड़ों लोगों ने उपासना का लाभ उठाया।

कृषि मंडी व्यापारियों के लिए बनाई गई। पर व्यापारी आए नहीं। मंडी सूनी पड़ी रह गई। यदा-कदा हमारे प्रवास के लिए काम में आती है। प्रतिमास १ और १६ तारीख को मौन का व्यवस्थित क्रम चल रहा है, उसमें आज कुछ परिवर्तन करना पड़ा। कल शहर में पहुंचना है और कल १६ तारीख होने से मौन दिवस है। जनता के आग्रह से कल होनेवाला मौन आज किया ताकि कल मुक्त रूप में काम किया जा सके। आज का प्रवचन साध्वीप्रमुखा ने किया।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण केलवा में

पवित्र दिशा में हो एकाग्रता

२० अक्टूबर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः श्री भैरूंलालजी बोहरा के प्रतिष्ठान से प्रस्थान कर चातुर्मासिक प्रवास स्थल महाप्रज्ञ भवन पधारे। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि तन्मयकुमारजी, समणी निर्मलप्रज्ञाजी एवं समणी मलयप्रज्ञाजी ने अपने दीक्षा दिवस पर अपनी भावनाएं अभिव्यक्त की। 'लगातार' पत्रिका के आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव विशेषांक के सन्दर्भ में पत्रिका के संपादक श्री प्रमोद सूर्या ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी एवं अतिथि संपादक श्री बी.सी.भलावत ने विशेषांक पूज्यप्रवर को भेंट किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने संबोधि पर आधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'ध्यान योग की साधना करने वाला व्यक्ति आत्मदर्शन को प्राप्त कर सकता है। ध्यान की साधना अध्यात्म का एक प्रयोग है। इसका परिणाम है--चित्त की निर्मलता। जो स्वयं ध्यान का अनुभवी होता है, वही दूसरों को ध्यान का अच्छा प्रयोग करवा सकता है। ध्यान के द्वारा एकाग्रता को प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु वह पवित्र दिशा में हो, यह काम्य है।'

पूज्य आचार्यवर ने साधु-साध्वियों और समणियों के दीक्षा दिवस के संदर्भ में कहा--'कार्तिक मास में अनेक साधु-साध्वियों और समणियों का दीक्षा दिवस है। मुनि तन्मयकुमारजी युवा और अच्छे-भले साधु हैं। गुरुदेव तुलसी के संसारपक्षीय परिवार से संबद्ध हैं। दो समणियों ने भी अपने दीक्षा दिवस के संदर्भ में अपनी भावनाएं रखीं। दीक्षित होना सौभाग्य की बात होती है। दीक्षित होने वाला व्यक्ति साधना शिखर पर आरोहण का प्रयास करता रहे। अपने निर्धारित आचार के प्रति जागरूक रहता हुआ कषाय मंदीकरण का अभ्यास करता रहे। इससे कल्याण का पथ प्रशस्त होता है।'

पूज्य आचार्यवर ने आगे कहा--'पानी कमल को पैदा करता है, किन्तु उसकी खुशबू को हवा फैलाती है। इसी प्रकार पत्रकार जगत के माध्यम से कितनी-कितनी जानकारियां जनता तक पहुंचती हैं। आजकल पत्र-पत्रिकाओं में केवल भौतिकवाद की ही नहीं, आध्यात्मिक बातें भी पढ़ने को मिलती हैं। यह भविष्य के लिए शुभ संकेत है।'

विकारों को दूर करें

२१ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने संबोधि के पंचम अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जिस व्यक्ति ने अपनी आत्मा को वश में कर लिया, उसने अपनी आत्मा को जान लिया है। जिसने आत्मा को वश में नहीं किया, वह अन्य सब कुछ जानते हुए भी आत्मा को नहीं जान सकता। आत्मा को जानने और उसे प्राप्त करने के लिए राग-द्वेष, मोह आदि विकारों को दूर करना होगा। अहंकार भी एक विकार है। एक ऐसा विकार, जो साधना में विघ्न पैदा करता है। साधक विनय भाव के द्वारा अहंकार से दूर रहने का प्रयास करे। स्वार्थ भावना भी एक विकार है जो आत्मदर्शन में बाधक बनता है। आत्मविकास के लिए स्वार्थवृत्ति हितकारी नहीं होती। अहंभाव, स्वार्थ आदि विकारों को त्याग कर साधक साधना के शिखर पर आरोहण कर सकता है।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ। शासनश्री मुनि किशनलालजी ने आगामी जीवनविज्ञान दिवस के संदर्भ में जानकारी दी। श्री देवीलाल कोठारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए जीवन विज्ञान के संदर्भ में निर्मित पोस्टर चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी के साथ पूज्यप्रवर को भेंट किया।

दृष्टिकोण सम्यक् हो

२२ अक्टूबर। पूज्य आचार्यवर की मंगल सन्निधि में आज राजसमन्द जिला अणुव्रत समिति कार्यशाला की समायोजना की गई। प्रातःकालीन कार्यक्रम में अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ.महेन्द्र कर्णावट, अणुव्रत समिति केलवा के अध्यक्ष श्री मुकेश कोठारी एवं राजसमन्द अणुव्रत समिति के मंत्री श्री मदन धोका ने अपने विचार व्यक्त किए। बालिका प्रियल और प्रियांशी हिरण ने बालस्वरों में आचार्यवर के व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी अभिभाषण हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने संबोधि के पंचम अध्याय पर आधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'संवेग का फल है--धर्मश्रद्धा। धर्मश्रद्धा से वैराग्य उत्पन्न होता है। पदार्थ के प्रति आसक्त रहने से व्यक्ति के कर्म बंधन की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। विरक्ति से आसक्ति की गांठ खुल जाती है। प्राणी के मन में मोक्ष प्राप्ति की अभिलाषा रहती है। चारित्र की आराधना से ही उस अभिलाषा की संपूर्ति संभव है। जिस व्यक्ति का दृष्टिकोण सम्यक् बन जाता है, उसका एक निश्चित काल में मोक्ष जाना तय है। आध्यात्मिक व्यक्ति वह है, जिसकी दृष्टि धर्म पर टिकी हुई है।'

अणुव्रत कार्यशाला को संबोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'अणुव्रत का दर्शन पांच व्रतों पर आधारित है। अणुव्रत के कार्यकर्ताओं में अणुव्रत का प्रभाव रहे। उनके जीवन में नैतिकता और प्रामाणिकता झलके। इस बार राजसमन्द जिले में हमारा लम्बा प्रवास हुआ। इससे अणुव्रत की गतिविधियों में गति आई है। कार्यकर्ताओं में ऐसे पवित्र कार्यों के प्रति निष्ठा और समर्पण का भाव रहे। अणुव्रत आन्दोलन प्रौढ़ अवस्था में चल रहा है। इसे प्रारंभ हुए साठ वर्ष से अधिक हो गए। साधु-साध्वियों, समणश्रेणी और कार्यकर्ताओं के योग से कार्य आगे बढ़ता रहे। अणुव्रत समिति पूरी निष्ठा के साथ योजनापूर्वक अपने कार्य को आगे बढ़ाती रहे।' कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

अनुकरणीय बने आचरण का आदर्श

२३ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का अभिभाषण हुआ। स्थानीय जैनेतर समाज के श्री देवीलाल तेली, श्री राजकुमार पालीवाल, श्री शान्तिलाल सरगरा व श्री लक्ष्मण कुम्हार आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'किसी भी प्रिय-अप्रिय स्थिति को सहने की जो क्षमता रखता है, सभी के प्रति समता का भाव रखता है, वह अच्छा व्यक्ति है। हर व्यक्ति को अपने जीवन में यह सूत्र आत्मसात् करने की आवश्यकता है कि अपने प्रति किसी अन्य से जिस तरह के व्यवहार की अपेक्षा नहीं की जाती, वैसा व्यवहार दूसरों के साथ नहीं होना चाहिए। व्यक्ति अपने व्यवहार व आचरण से ऐसा आदर्श प्रस्तुत करे, जो सबके लिए अनुकरणीय हो।' नशे की बढ़ती जा रही प्रवृत्ति पर आचार्यवर ने कहा--'नशे से मात्र शरीर का ही नाश नहीं होता, अपितु परिवार को आर्थिक तंगी के दौर से भी गुजरना पड़ता है। नशाखोरी से अपराध की वृत्ति पैदा होती है। नशे का आदी व्यक्ति स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख पाता। घरेलू हिंसा का एक कारण नशे को माना गया है। अणुव्रत आन्दोलन नशामुक्ति की दिशा में लंबे समय से जागरण का अभियान चला रहा है और इसके सकारात्मक परिणाम भी आए हैं।' पूज्य आचार्यवर ने लोगों को नशामुक्ति का संकल्प भी करवाया। पूज्यवर ने प्रसंगवश मुनि भवभूतिजी की सेवा भावना व तपःवृत्ति की सराहना की।

मुनि हनुमानमलजी 'हरीश' द्वारा आलेखित व मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' द्वारा संपादित 'केलवा का इतिहास' पुस्तक मुनि हरीशजी के संसारपक्षीय अनुज मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी ने पूज्यवर को उपहृत करते हुए अपने वक्तव्य में कहा--'हर श्रद्धाशील क्षेत्र व साधु-साध्वियों का इतिहास सुरक्षित रहना चाहिए। इससे दूसरों को प्रेरणा प्राप्त होती है। धर्मसंघ के इतिहास से अनभिज्ञ व्यक्ति धर्मसंघ के बलिदान व दायित्व को कैसे समझ पाएंगे? अवगति होने से उनके मन में कृतज्ञता का भाव रहेगा।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'मैंने जैसा देखा है, मुनि हनुमानमलजी 'हरीश' स्वभाव से भले व अच्छे संत थे। उनकी यह कृति कुछ नवीनता के साथ सामने आई है। शासनश्री मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' इतिहास में रुचि रखते हैं। उन्होंने इस पुस्तक को अप-टु-डेट बनाया है। केलवा की दृष्टि से यह एक अच्छी पुस्तक है।' आचार्यवर ने आगे कहा--'शासन गौरव स्व. मुनि बुद्धमल्लजी स्वामी ने इतिहास आलेखन की दृष्टि से गुरुतर कार्य किया है। तेरापंथ इतिहास मनीषी स्व. मुनि नवरतनमलजी स्वामी ने 'शासन समुद्र' के रूप में एक ग्रंथ शृंखला का निर्माण कर महनीय कार्य किया है।'

तेरापंथी सभा केलवा द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक अध्यक्ष श्री बाबूलालजी कोठारी, प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी व वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री संपत मादरेचा ने पूज्यप्रवर को भेंट की।

श्रद्धाशील सुश्रावक श्री भंवरलालजी डूंगरवाल (दौलतगढ़) की स्मृति में प्रकाशित ग्रंथ 'श्रद्धा का भंवर'

श्री पुखराज, अशोक, रेवंत व संजय डूंगरवाल ने पूज्यवर को भेंट किया। उनकी सुपुत्री पुस्तक की संपादिका श्रीमती मंजुला भंसाली ने इस संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'कई श्रावक ऐसे होते हैं, जिनका इतिहास सामने आना चाहिए। भंवरलालजी डूंगरवाल श्रद्धाशील श्रावक थे।' प्रसंगवश स्व. श्री डूंगरवालजी के निकट संबंधी श्री फतेहचन्दजी भंसाली के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'फतेहचन्दजी गुरुदेव तुलसी के युग से ही पास में बैठकर सेवा करते रहे हैं। आचार्य महाप्रज्ञ के समय में भी इसी तरह सेवा करते रहे और अब भी सेवा करते हैं। ये स्वयंसेवक की भांति अपने ढंग से सेवा करते हैं। गुरुओं की इन पर कृपा रही है। ये रात को लगभग दो-ढाई बजे सेवा में आ जाते हैं। ये इसी तरह सेवा करते रहें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

धन से नहीं होती शाश्वत सुख की प्राप्ति

२४ अक्टूबर। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि किशनलालजी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में संयम और साधना के प्रति जागरूक रहने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

परमाराध्य आचार्यवर ने संबोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आत्मिक सुख की प्राप्ति से व्यक्ति का कल्याण संभव है। आत्मिक सुख का आनंद भी अलग है। जो व्यक्ति मात्र धन के प्रति आकर्षित है, मात्र भौतिक सुख प्राप्त करना चाहता है, विषय-भोगों में रचा-पचा रहता है, ऐसे व्यक्तियों में अध्यात्म का आकर्षण उत्पन्न करना चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'गृहस्थ को अपना जीवन चलाने के लिए धन की आवश्यकता होती है और इसकी उपयोगिता भी परिलक्षित होती है। धर्म से विमुख होकर धन के पीछे भागना समीचीन नहीं है। धन से सुविधाएं और भौतिक सुख की प्राप्ति तो हो सकती है, पर शाश्वत सुख की प्राप्ति धर्म से ही संभव है। व्यक्ति को चाहिए कि वह मोह से अमोह, भोग से योग व भौतिक सुख से आत्मिक सुख की ओर गतिमान बने।'

मध्याह्न में कनकविला में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के सान्निध्य में स्थानीय महिला मंडल द्वारा आयोजित कन्या भ्रूणहत्या रोकथाम संगोष्ठी आयोजित हुई। स्थानीय महिला मंडल की मंत्री श्रीमती रत्ना कोठारी आदि ने अपने विचार रखे। महिला मंडल प्रभारी साध्वी कल्पलताजी के वक्तव्य के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी ने अपने प्रबोधन में महिलाओं से आह्वान किया कि वे अपनी आन्तरिक ऊर्जा को जगाएं, बढ़ाएं और उसका समुचित उपयोग करें। संगोष्ठी का संचालन कन्या मंडल संयोजिका सुश्री किरण कोठारी ने किया।

संघ की मजबूती का आधार गुरु-शिष्य का तादात्म्य भाव

२५ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्य आचार्यवर ने संबोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा 'दुनिया में भिन्न-भिन्न अभिप्राय, रुचि व चिंतन वाले लोग होते हैं। वे पृथक्-पृथक् सिद्धान्तों को मानने वाले लोग होते हैं। कोई आस्तिक है तो कोई नास्तिक। कोई स्वर्ग-नरक, पुण्य-पाप, आत्मा-परमात्मा को मानता है तो कोई नहीं मानता। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति को सदैव अच्छे कार्य करते रहना चाहिए।

प्रसंगवश बाल मुनियों की ओर उन्मुख होकर आचार्यवर ने कहा--'अनेक बाल मुनि मेरे पास रहते हैं। हमारे संघ का सौभाग्य है कि बाल मुनि होते रहते हैं। इन बाल मुनियों से हमारा संघ शोभायमान हो रहा है। ये बाल मुनि ज्ञान-ध्यान की आराधना करते रहें।' बाल मुनियों का नामोल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा 'मुनि कीर्ति व मुनि विश्रुत पहले मेरे पास सैनिक की भांति रहते। अब मुनि मृदु व गौरव मेरे पास रहने लग गए हैं। दोनों की अच्छी जोड़ी है। बाल मुनि गौतम, सुधांशु, अनुशासन, मृदु, गौरव, हितेन्द्र, हेमन्त, शुभंकर व अतुल मेरी सेवा में रहते हैं। ये अपना खूब विकास करें।

संघीय परिप्रेक्ष्य में मार्गदर्शन प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'हमारे धर्मसंघ में गुरु का सर्वोच्च और सर्वाधिक सम्मान्य स्थान है। गुरु व शिष्य का आध्यात्मिक तादात्म्य बना रहना चाहिए। यह तादात्म्य भाव संघ को मजबूत करनेवाला होता है। जहां इस तादात्म्यभाव का अभाव होता है, न गुरु का शिष्य के प्रति और न शिष्य का गुरु के प्रति ध्यान होता है, यह स्थिति संघ की दीर्घजीविता में बाधक बन जाती है। संघ में आचार्यों की कृपा व अकृपा की स्थिति आ सकती है। लेकिन संघ में यही शिक्षा दी जाती रही है कि यदि आचार्यों की

अकृपा की स्थिति हो जाए तो गुरु के पास और अधिक जाना चाहिए। तीन बार जाते हैं तो अकृपा की स्थिति में छह बार जाना चाहिए। यह हमारे संघ का अच्छा शिक्षण और प्रशस्त विधि है कि शिष्य गुरु को रिझाने का प्रयास करे। गुरु अप्रसन्न लगें तो उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। शिष्य को यह ध्यान देना चाहिए कि ऐसी कोई गलती मेरे से हुई है क्या? गलती की खोज की जानी चाहिए। गलती समझ में न आए तो गुरु के समीप रहने से गुरु वह गलती बता भी सकते हैं या फिर इतनी विनम्रता की जाए कि गुरु प्रसन्न हो जाएं। किसी भी कारण से हुई अप्रसन्नता समाप्त हो जाए।' आज चतुर्दशी होने से आचार्यवर ने हाजरी का वाचन करते हुए उसकी कुछ धाराओं का विश्लेषण किया।

तेरापंथ इतिहास मनीषी मुनि सागरमलजी 'श्रमण' की स्मृति सभा

२५ अक्टूबर। तेरापंथ इतिहास मनीषी मुनि सागरमलजी 'श्रमण' का २३ अक्टूबर, रविवार को प्रातः सात बजे ८६ वर्ष की अवस्था में सिरियारी में देवलोकगमन हो गया। गुरुदेव तुलसी द्वारा स्वास्थ्य निकाय व्यवस्थापक व गुरुदेव महाप्रज्ञ द्वारा सूचना प्रभारी के रूप में नियुक्त मुनि सागरमलजी को आचार्य महाश्रमण ने सरदारशहर प्रवास में तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर 'तेरापंथ इतिहास मनीषी' के रूप में संबोधित किया था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर की पावन सन्निधि में आयोजित स्मृति सभा में शासनश्री मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन', शासनश्री मुनि सुखलालजी, शासनश्री मुनि पानमलजी, शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि भवभूतिजी, शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी, मुनि उदितकुमारजी, शासन गौरव मुनि धनंजयकुमारजी, मुनि तन्मयकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, स्व. मुनिश्री के कोठारी कुल से संबद्ध मुनि गौरवकुमारजी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी कल्पलताजी ने उनकी विशेषताओं को विभिन्न कोणों से प्रस्तुत किया। वर्षों तक कासीद के रूप में उनकी सेवा करने वाले सुखदान चारण ने भी अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए।

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'संघ महान है। समर्पित भाव से जो संघ को अपना जीवन न्योछावर कर देते हैं, वे भाग्यशाली और कृतपुण्य होते हैं। मुनि सागरमलजी स्वामी बेजोड़ संत थे। उनकी संघनिष्ठा व सेवा भावना प्रशस्य थी। वे इतिहासविद् थे। ऐतिहासिक प्रसंगों को प्रस्तुत करने की उनकी अपनी अनूठी शैली थी।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने कहा--'मुनि सागरमलजी स्वामी अनेक विशिष्टताओं के धनी थे। उनकी दीक्षा मेरे जन्म से पहले हो गई थी। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में शिक्षण के दौरान मैंने २०१५ में कानपुर चातुर्मास में पहली बार गुरुदेव के दर्शन के दौरान उन्हें देखा। तुलसी युग के विशिष्ट संतों में वे एक थे। इतिहास के तो वे मानों खजाने थे। उनकी सेवा भावना विलक्षण थी। मुनिश्री में कला की अच्छी परख थी। उन्होंने तीन आचार्यों का शासनकाल देखा।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'कोई आत्मा ऐसी होती है, जिसके दिवंगत होने पर मेरे सिवाय अन्य अनेक लोग उनके गुणों का स्मरण करते हुए अपने उद्‌गार व्यक्त करते हैं। मुनि सागरमलजी स्वामी एक ऐसे संत थे, जो अनेकानेक विशेषताओं के पुंज थे। मेरे लिए तो वे बहुत बड़े संत थे, क्योंकि वे मेरे जन्म से बहुत पहले शासन में दीक्षित हो गए थे। मैं उन्हें बचपन से जानता हूं।

मुनिश्री के बारे में जितना मैंने जाना व समझा, वे वत्सलता प्रदान करने वाले थे। उन्हें 'थापीवाला महाराज' कहा जाता था। कोई वंदना करने जाता तो वे उसे थापी देते। यह उनका वात्सल्य भाव था। उनका सेवाभाव भी प्रशस्य था। सेवाभावी मुनि चंपालालजी स्वामी (भाईजी महाराज) की सेवा करने वालों में मुख्य नाम मुनिश्री का था। लगभग तीस वर्ष तक वे उनके साथ अन्तिम समय तक रहे। मुनिश्री कुशल लिपिकार, चित्रकार, कलाकार और प्रवचनकार थे। उन्होंने कई प्रतिबोधक चित्र बनाए। तेरापंथ इतिहास व क्षेत्रीय इतिहास के वे विशिष्ट जानकार थे। मुनि बुद्धमल्लजी स्वामी, मुनि नवरत्नमलजी स्वामी पधार गए। अब मुनि सागरमलजी स्वामी भी नहीं रहे। उनके चले जाने से हमारे धर्मसंघ में एक इतिहास मनीषी संत की कमी हो गई। हमारे संतों के द्वारा उनकी पूर्ति हो सके, ऐसा प्रयास करना है।'

संतों के सेवा भाव का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'मुनि मणिलालजी स्वामी लंबे समय तक उनके साथ रहे। मुझे लगता है उनका परस्पर एक आन्तरिक लगाव था। सागरमलजी स्वामी उनकी सेवा कर देते और मणिलालजी स्वामी उनकी सेवा करते। उनका आपस में गहरा ऐक्यभाव था। इतने ऐक्यभाव में थोड़ा

राग भाव होना भी स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति में उनके लिए समताभाव रखना आवश्यक है। साथ में हमारे दो मुनि मुनि राजकुमारजी व मुनि कुशलकुमारजी हैं। हमारे संघ में सेवा की अच्छी व्यवस्था है। मुनि कुशलकुमारजी तो कई वर्षों से उनके साथ हैं। सरदार ाहर प्रवास में मेरे मन में आया कि सागरमलजी स्वामी के पास एक संत और भेजना चाहिए। इस चिंतन के आधार पर भर गर्मी में मैंने मुनि राजकुमारजी को उनके पास भेजा। उन्हें काफी लंबा चलना पड़ा और उन्होंने अच्छे साहस का परिचय दिया। इतनी गर्मी में वे अकेले चले गए, यह खास बात है। उनको भी सेवा का अच्छा मौका मिल गया।' आचार्यवर ने मुनिश्री के संदर्भ में दो पद्य फरमाए--

सागर गुण आकर सुखद, कलाकार विद्वान।
स्वामीजी के धाम में, किया स्वर्ग प्रस्थान॥
धैर्यवान बनकर रहें, मुनिप्रवर मणिलाल।
शासन की सेवा करें, रखें स्वास्थ्य संभाल॥

दीपावली पर पावन पाथेय--भीतर के दीप जलाएं

२६ अक्टूबर। कार्तिक कृष्णा अमावस्या। भगवान महावीर का निर्वाण दिवस और दीपावली का पावन पर्व। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि विजयकुमारजी व साध्वीवृन्द ने दीपावली के उपलक्ष्य में गीत का संगान किया। मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा--'आजका दिन स्वयं सिद्ध दिन है। आज के दिन भगवान महावीर का निर्वाण हुआ। वर्तमान को सुनियोजित ढंग से जीने के लिए हम भगवान महावीर की वाणी को हृदयंगम करें। जो भगवान महावीर की आराधना करता है, उसे अनंत शक्ति प्राप्त होती है।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने संबोधि के छठे अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हिंसा और दुःख का परस्पर संबंध है। हिंसा से दुःख उत्पन्न होता है, जिससे भय और वैर की परंपरा बढ़ती है। धर्म का सार है व्यक्ति हिंसा से उपरत होकर अहिंसा के मार्ग पर आगे बढ़े। यदि जीवन में समता नहीं है, राग-द्वेष का प्राबल्य है तो व्यक्ति हिंसा की दिशा में आगे बढ़ जाता है।'

दीपावली के पुनीत प्रसंग पर पूज्यप्रवर ने कहा--'आज का दिन महापुरुषों के साथ संबद्ध है। अमावस्या जैसा दिन भी भगवान महावीर और भगवान राम के साथ जुड़कर महत्त्वपूर्ण बन गया है। भारतीय त्योहारों में दीपावली का बड़ा महत्त्व है। आज के दिन भगवान महावीर का परिनिर्वाण हुआ और आज के दिन भगवान राम अयोध्या लौटे। इस प्रसंग पर दीप जलाए जाते हैं। लौकिक दृष्टि से दीपों का अपना महत्व है, किन्तु भीतर के दीप जल जाएं तो कल्याण का पथ प्रशस्त हो सकता है। भीतर के दीप हैं--सम्यक् ज्ञान और सम्यक् आचार। आज के दिन अपने भीतर प्रज्ञा और निर्मल आचार का दीप प्रज्ज्वलित करने का प्रयास करें तो दीपावली को मनाना अधिक सार्थक हो सकेगा।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'प्रभु महावीर समता के परम उपासक थे। उनके जीवन से वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। उनके जीवन को पढ़ें और उससे प्रेरणा प्राप्त कर अनुप्रेक्षा के प्रयोगों द्वारा समत्व की साधना को पुष्ट करने का प्रयास करें।' आचार्यवर ने इस अवसर पर आतिशबाजी से होने वाले हिंसा आदि दुष्परिणामों की चर्चा करते हुए उससे उपरत रहने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने आतिशबाजी न करने का संकल्प स्वीकार किया।

गत दिनों समायोजित अन्तर्राष्ट्रीय सापेक्ष अर्थशास्त्र सेमिनार के विभिन्न सत्रों में मुनि उदितकुमारजी, शासन गौरव मुनि धनंजयकुमारजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि जयंतकुमारजी, मुनि अक्षयप्रकाशजी, साध्वी रिद्धियशाजी, समणी सत्यप्रज्ञाजी एवं समणी रोहितप्रज्ञाजी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए।

भारत सरकार के आर्थिक सलाहकार श्री एम.सी.सिंघी, वरिष्ठ सी.ए. संजय धारीवाल, कैग के वरिष्ठ अधिकारी श्री विजय कोठारी, सी.एन. बी. सी. आवाज के संपादक श्री संजय पुगलिया, रिजर्व बैंक अहमदाबाद के सहायक जनरल मैनेजर श्री पी. सी. सिंगी, इग्नू के उपकुलपति श्री आर. सी. वत्सन, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स के डॉ. अजयकुमारसिंह ने अपने वक्तव्यों में सापेक्ष अर्थशास्त्र की विभिन्न कोणों से व्याख्या की। सेमिनार की व्यवस्था में श्री बजरंग जैन, श्री मयंक बोहरा, श्री मनोज कोठारी, श्री अनिल कोठारी, श्री नीतेश बैद तथा तेयुप नाथद्वारा, कांकरोली व केलवा का निष्ठापूर्ण योग रहा।

आगम मंथन प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण

१६ अक्टूबर। जैविभा द्वारा वर्षों से चलाई जा रही आगम मंथन प्रतियोगिता के क्रम में नायाधम्मकहाओ पर आधारित पांचवीं प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम पूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में आयोज्य था, किन्तु आचार्यवर का उमराया क्षेत्र में प्रवास होने से यह कार्यक्रम तेरापंथ समवसरण में मंत्री मुनिश्री के सान्निध्य में आयोजित हुआ। प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त विजयश्री मरोठी व ममता सांड (नोखा), द्वितीय ज्योति दफ्तरी (सरदारशहर), तृतीय प्रिया गधैया (सरदारशहर) को प्रायोजक भीखमचन्दजी पुगलिया द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। मंत्री मुनिश्री ने ऐसी प्रतियोगिताओं को ज्ञानवृद्धि का अच्छा उपक्रम बताया। कार्यक्रम का संचालन शासनसेवी श्री रतनलालजी चोपड़ा ने किया।

केरियर काउंसलिंग का आयोजन

१७ अक्टूबर को परम पावन आचार्यवर की मंगल सन्निधि में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम राजसमन्द द्वारा केरियर काउंसलिंग का आयोजन किया गया। इस दौरान राजसमन्द जिले के विभिन्न विद्यालयों के १८६ विद्यार्थियों का आई.क्यू.परीक्षण किया गया तथा उनकी जिज्ञासाओं को समाहित करते हुए उनके भविष्य के बारे में परामर्श दिया गया।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संभागियों को संबोधित करते हुए कहा--'जिस प्रकार एक राहगीर को चौराहे, तिराहे और दोराहे पर ध्यान देना होता है कि उसे किस दिशा में जाना है, उसी प्रकार विद्यार्थी जीवन में एक समय ऐसा आता है, जब उसे अपनी दिशा और लक्ष्य का निर्धारण करना होता है। यदि लक्ष्य सम्यक् हो और उस दिशा में सत्पुरुषार्थ हो तो सफलता का वरण किया जा सकता है। लक्ष्य निर्धारण में अनुभवियों का निर्देशन अथवा परामर्श उपयोगी सिद्ध हो सकता है।' संभागियों को शासन गौरव मुनि धनंजयकुमारजी एवं मुनि रजनीशकुमारजी की प्रेरणा के साथ काउंसलर प्रो. जयशंकर आदि प्रशिक्षकों से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ।

स्मृति-संबल

- सरदारशहर निवासी श्रीमती मैनादेवी लूणिया (धर्मपत्नी-स्व.हंसराजजी लूणिया) का देहावसान हो गया। युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी से 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त मैनादेवी की संघ और संघपति के प्रति अटूट आस्था थी। उन्होंने अपनी दो बहिनों--श्रीमती झमकूदेवी (साध्वी अशोकश्रीजी की संसारपक्षीया मां) एवं श्रीमती शांतिदेवी के साथ लंबे समय तक गुरु उपासना की। कई वर्ष तक साठ-सत्तर लोगों का संघ महीनों तक केन्द्र की उपासना में ले जाती थीं। इसमें वैरागी मोहन (आचार्य महाश्रमण) भी गए थे। आचार्य महाश्रमण के चतुर्मास में मैनादेवी ने पूरा लाभ लिया। संघ-संघपति की आलोचना का एक शब्द भी सुनना उन्हें पसन्द नहीं था। सगे भाई के संघ से पृथक् होने के बाद उन्होंने उनसे नाता तोड़ लिया, यह उनकी दृढ़ संघनिष्ठा का परिचायक है। उनके प्रतिदिन तेरह सामायिक, तेरह घंटा मौन व तेरह द्रव्य का नियम था। वे धर्ममूर्ति श्राविका थीं।
- जलगांव निवासी श्री दौलतराम लूणिया का नौ दिनों के संथारे में स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्रावक थे।
- सायरा निवासी सूरत प्रवासी कुमारी दीथि कावड़िया (सुपुत्री-श्री नरेश कावड़िया) का मात्र सात वर्ष की अल्पायु में देहान्त हो गया। दीथि सूरत ज्ञानशाला की ज्ञानार्थी थी। मरणोपरान्त उसका नेत्रदान भी हुआ।
- देशनोक निवासी श्रीमती शोभादेवी मालू (धर्मपत्नी-श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री नेमचन्द मालू) का देहावसान हो गया। वह सेवा भावना वाली श्राविका थी।
- हिसार निवासी श्रीमती चन्द्रमुखीदेवी सोनी (धर्मपत्नी-श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री रामप्रसाद सोनी) का संवत्सरी के दिन देहावसान हो गया। वह सामायिक साधना और उपासना में जागरूक श्राविका थीं। पूरा सोनी परिवार धर्मसंघ के प्रति समर्पित है।
- कनाना निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्रीमती भाग्यवंतीदेवी गणधर चौपड़ा (धर्मपत्नी-स्व.चंपालालजी चोपड़ा) का तेरापंथ भवन में पर्युषण आराधना शिविर के दौरान देहान्त हो गया। वहां प्रवासित साध्वी पीयूषप्रभाजी

की सहज सन्निधि उन्हें उपलब्ध हुई। दृढ़ आस्था, धार्मिक प्रवृत्ति और सरल प्रकृति वाली, सेवाभावी श्रीमती भाग्यवंतीदेवी के प्रतिदिन सात सामायिक का नियम था। पैंतीस वर्ष की उम्र में ही उनके जमीकन्द के सेवन और रात्रि भोजन का परित्याग था। पूरा परिवार धार्मिक विचारों से ओतप्रोत है। उनके सुपुत्र सोहनराज चोपड़ा चौदह वर्षों से ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। पुत्रवधू मनीता चोपड़ा अठारह वर्षों से ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका है। वर्तमान में वह स्थानीय महिला मंडल की मंत्री है। पूरे चोपड़ा परिवार में धर्म के गहरे संस्कार हैं।

- गंगाशहर निवासी फारबिसगंज प्रवासी श्री सुशील भंसाली की असामाजिक तत्त्वों द्वारा निर्मम हत्या कर दी गई। सुशील उस क्षेत्र का लोकप्रिय सामाजिक कार्यकर्ता था। परिवार पर हुए इस बज्राघात को पारिवारिकजनों ने देव, गुरु, धर्म के सहारे धैर्य के साथ सहन किया। भंसाली परिवार सेवाभावी और श्रद्धालु परिवार है।

संबोधन-अलंकरण

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने परम श्रद्धेय गुरुदेव तुलसी के जन्मदिवस के अवसर पर अनेक श्रावक-श्राविकाओं एवं कार्यकर्ताओं को विभिन्न संबोधनों से संबोधित किया। उनकी सूची इस प्रकार है--

१. श्री सुरेशजी कावड़िया	राजनगर	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
२. श्री कन्हैयालालजी छाजेड़	सरायपाली	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
३. श्री मदनलालजी रांका	आसीन्द	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
४. श्री रोशनलालजी मेहता	पिपलान्त्री	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
५. श्री शान्तिलालजी कातरेला	बगड़ी-चेन्नई	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
६. स्व. जसकरणजी फूलफगर	लाडनूं-गुवाहाटी	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
७. स्व. नगराजजी घीया	इन्दोर	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
८. स्व. शुभकरणजी लूणिया	चाड़वास	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
९. स्व. विनोदजी सुराणा	तारानगर	श्रद्धानिष्ठ श्रावक
१०. श्रीमती सज्जनदेवी सुतरिया	अड़सीपुरा	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
११. श्रीमती नजरीबाई मेहता	राजनगर	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
१२. स्व. श्रीमती मनोहरीदेवी मालू	श्रीडूंगरगढ़	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
१३. स्व. श्रीमती घेवरीदेवी भंसाली	सुजानगढ़	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
१४. स्व. श्रीमती कानीदेवी सुराणा	नोखा	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
१५. स्व. श्रीमती इलायचीदेवी चोपड़ा	गंगाशहर	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
१६. स्व. श्रीमती भाग्यवंतीदेवी चोपड़ा	अहमदाबाद	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
१७. स्व. श्रीमती हुलासीदेवी बोथरा	छापर	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
१८. स्व. श्रीमती अमानदेवी सिंघी	लाडनूं	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
१९. स्व. श्रीमती रतनदेवी मुर्डिया	उदयपुर	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
२०. स्व. श्रीमती हुलासबाई पोरवाल	उदयपुर	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
२१. स्व. राजबाला जैन	जमालपुर-दिल्ली	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
२२. स्व. श्रीमती कमलादेवी चोरड़िया	लाछुड़ा	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
२३. श्री जीतमलजी कच्छारा	राजसमन्द	अणुव्रतसेवी
२४. श्री चतुर कोठारी	राजसमन्द	अणुव्रतसेवी
२५. श्री जगमोहन माथुर	लाडनूं	अणुव्रतसेवी
२६. श्री राजेन्द्र गोरवाड़ा	सायरा	अणुव्रतसेवी
२७. श्री रतनलालजी खाब्या	भीलवाड़ा	अणुव्रतसेवी

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/09-11 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/- स्व. रणजीतमलजी गादिया (सुपुत्र-स्व. श्री मिश्रीमलजी गादिया, इन्दोर) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी-श्रीमती राजकुअंर, सुपुत्र एवं पुत्रवधू राजेश-ज्योति, सुपौत्र दिव्य एवं सुपौत्री निधि गादिया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. जतनलालजी दूगड़ (सुपुत्र-स्व. श्री मोनीलालजी दूगड़, सरदारशहर-अगरतल्ला) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मंजुदेवी एवं सुपुत्र क्रान्ति दूगड़ द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती कमलादेवी बैद (धर्मपत्नी-शासनसेवी स्व. श्री जीवनमलजी बैद, लाडनूं-भागलपुर) के दसदिवसीय संघ प्रभावक चौविहार संथारे की संपन्नता के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र विजय (गुवाहाटी) अजय (दिल्ली) राजकुमार(कोलकाता) सुरेन्द्र, प्रदीप (भागलपुर) एवं सुपौत्र आलोक, अभिनंदन, विनीत व निपुण बैद द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती इन्द्रादेवी बम (धर्मपत्नी-श्री पारसमलजी बम, दोंडाइचा) की पुण्यस्मृति में भूरमलजी, गणेशमल, मुकेशमल, कल्पेशकुमार, सिद्धेशकुमार, उत्कर्षकुमार, नयना, प्रज्ञा, प्रेक्षा बम द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री जसकरणजी फूलफगर (सुपुत्र-स्व.पूनमचन्दजी फूलफगर, लाडनूं-गुवाहाटी) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र राजकुमार, निर्मलकुमार फूलफगर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. अमित एवं सौ. तनु (सुपौत्र एवं पौत्रवधू-स्व. श्री कानमलजी सेठिया, छोटीखाटू-कानपुर) के अठाई तप के उपलक्ष्य में श्री टीकमचन्द-विमलादेवी, अजय-रेणु, प्रखर, कृति, आयुषी सेठिया द्वारा प्रदत्त।

संगायक ध्यान दें–

- गृहस्थों द्वारा गाई जाने वाली साधु-साध्वियों की रचनाओं से युक्त कैसेट/सी.डी. में कम से कम तीन साधुओं अथवा तीन साध्वियों और समणियों की रचनाओं का होना आवश्यक है।
- आचार्यों की रचनाओं के साथ साधु-साध्वियों और समणश्रेणी की रचनाओं को स्वर न दिया जाए।
- साधुओं की रचनाओं के साथ साध्वियों और समणियों की रचनाओं को स्वर न दिया जाए।
- कैसेट/सी.डी के कवर आदि में आचार्यों के चित्र के साथ साधु-साध्वियों और गृहस्थों के चित्र न हों तथा साधु-साध्वियों और समणश्रेणी के चित्र के साथ विपरीत लिंगी का चित्र न हो।
- साधु-साध्वियों और समणश्रेणी द्वारा गाए जाने वाले गीतों आदि की कैसेट/सी.डी. के निर्माण से पूर्व केन्द्र की स्वीकृति आवश्यक है। उसके निर्माण का अधिकार अमृतवाणी का रहेगा और उसमें म्यूजिक का प्रयोग नहीं हो सकेगा। साधु-साध्वियों और समणश्रेणी द्वारा गाए जाने वाले गीतों आदि की कैसेट/सी. डी. में कम से कम तीन साधुओं अथवा तीन साध्वियों और समणियों की रचनाओं और स्वरों का होना आवश्यक है।

उपर्युक्त नियमों की अनुपालना के प्रति जागरूकता रहे।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता है

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति
पो. केलवा-३१३ ३३४, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**

WWW.TERAPANTHINFO.COM
WWW.JSTMAHASABHA.ORG